

नागार्जुन की कविताएं

1. हाथ लगे आज पहली बार
हाथ लगे आज पहली बार
तीन सर्कुलर, साइक्लोस्टाइलवाले
यूएनए द्वारा प्रचारित
पहली बार आज लगे हाथ
अहसास हुआ पहली बार आज ...
गत वर्ष की प्रज्वलित अग्निशिखा
जल रही है कहीं-न-कहीं, देश के किसी कोने में
सुलग रही है वो आंच किन्हीं दिलों के अन्दर...
'अन्डर ग्राउण्ड न्यूज एजेन्सी' यानि यूएनए
फंक्शन कर रही है कहीं न कहीं!
नए महाप्रभुओं द्वारा लादी गई तानाशाही
जरूर ही पंचर होगी
तार-तार होगी जरूर ही
जनवाद का सूरज डूब नहीं जाएगा
गहन नहीं लगा रहेगा हमेषा अभिनव फ़ासिज्म का...
अहसास हुआ पहली बार आज
छपरा जेल की इस गुफा के अन्दर
ठीक डेढ बजे रात में
(रचनाकाल: 1975)

2. मुबारक हो नया साल
फ़लां-फ़लां इलाके में पड़ा है अकाल
खुसुर-पुसुर करते हैं, खुश हैं बनिया-बकाल
छलकती ही रहेगी हमदर्दी सांझ-सकाल-
अनाज रहेगा खत्तियों में बंद!
हड्डियों के ढेर पर है सफ़ेद ऊन की शाल...
अब के भी बैलों की ही गलेगी दाल!
पाटिल-रेड्डी-घोष बजाएँ गाल...
शामेंगे डालरी कमंद!
बत्तख हों, बगलें हों, मेंढक हों, मराल
पूछिए चलकर वोटों से मिजाज का हाल
मिला टिकट? आपको मुबारक हो नया साल
अब तो बाटिए मित्रों में कलाकंद!
(रचनाकाल:1967)

3. नए सिरे से
नए सिरे से
नए सिरे से
घिरे-घिरे से
हमने झेले
तानाशाही के वे हमले
आगे भी झेलें हम शायद
तानाशाही के वे हमले.. नए सिरे से
घिरे-घिरे से
'बदल-बदल कर चखा करे तू दुख-दर्दों का स्वाद'
'शुद्ध स्वदेशी तानाशाही आए तुझको याद'
'फ़िर-फ़िर तुझको हुलसित रखे अपना ही उन्माद'
'तुझे गर्व है, बना रहे तू अपना ही अपवाद'
(रचनाकाल: 1977)

पूँजीवाद का खात्मा ही जाति व्यवस्था का अंतिम हल

आजादी के 67 वर्ष बाद भी जाति व्यवस्था का कलंक देश में मौजूद है। खैरलांजी, बथानी टोला, लक्ष्मणपुर बाथे जैसे नृशंस हत्याकांड दिखलाते हैं कि आज भी जाति व्यवस्था, जातीय उत्पीड़न की हकीकत बनी हुई है। इसी के चलते दलित महिलाओं से बलात्कार, अंतरजातीय प्रेम विवाह करने वाले युवक-युवतियों को मार देना जैसी हैवानियत जब-तब सामने आती रहती है। आज भी बड़े पैमाने पर सामाजिक आचार व्यवहार में दलित रोज ही भेदभाव, उत्पीड़न का शिकार बन रहे हैं। यह सब पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा बनाये गये कानूनों के बावजूद बदस्तूर जारी है।

भारतीय पूँजीवादी व्यवस्था की कभी-भी दिल्ली चाहत नहीं रही कि जाति व्यवस्था खत्म हो। जातिवादी भेदभाव, उत्पीड़न का वह हमेशा ही लाभ उठाता रहा है। इस सामाजिक भेदभाव से वह मजदूरों-मेहनतकशों को बांटकर रखता है। जातिवाद के कारण वह तमाम पिछड़े इलाकों में अपने शोषण की मात्रा व क्रूरता को बढ़ाकर अधिक मुनाफ़ा कमाता रहा है। हां, पूँजीवादी व्यवस्था अपनी गति में जरूर जाति व्यवस्था के आधार को खत्म करते हुए आगे बढ़ी है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने परम्परागत ग्रामीण अर्थव्यवस्था को तोड़ दिया जिसका आधार जातिवाद था। जिसकी मुख्य विशेषता जाति आधारित पेशा था यानि व्यक्ति की पेशा के साथ ही उसकी जाति व इसलिए भविष्य में उसका पेशा तय हो जाते हैं। पूँजीवाद ने इस आधार को खिसका दिया है। आज बाटा की जूता फैक्टरी में काम करने के लिये ब्राह्मण तक खुशी-खुशी तैयार हैं।

पूँजीवादी व्यवस्था ने तो अपनी गति में क्रमशः जाति व्यवस्था के आधार को खिसकाया किन्तु पूँजीवादी राजनीतिक पार्टियों ने अपने और व्यवस्था के हित में ना सिर्फ़ इसे बनाकर रखा है बल्कि अपनी वोट बैंक की राजनीति के हिसाब से अलग-अलग पार्टियां जातिवाद का भरपूर इस्तेमाल भी करती हैं। पिछड़ों दलितों की राजनीति करने वाली पार्टियों से लेकर स्वतंत्र दलित संगठन भी जाति व्यवस्था का इस्तेमाल ही अधिक करते हैं। ये कभी भी अपने एजेण्डे पर जातिवाद के उन्मूलन को नहीं रखते हैं।

भारत में आजादी के बाद जाति व्यवस्था के सम्पूर्ण विनाश के लिए भूमि सुधार सरीखे वृहत आर्थिक उपाय अपनाने के बजाय शासकों ने महज जातीय आरक्षण की घोषणा कर अपने कर्तव्य की इतिश्री कर ली। इससे उस समय जाति व्यवस्था के क्रांतिकारी तरीके से खात्मे की राह अवरूद्ध हो गई। और बाद में पूँजीवादी दायरे में चलने वाले जाति विरोधी संघर्षों में भी आरक्षण बड़ा मुद्दा बनने लगा। इसी सब का परिणाम यह निकला कि आजादी के इतने वर्षों बाद भी धीरे-धीरे कमजोर हो रही जाति व्यवस्था आज भी दलितों का खून बहाती नज़र आती है।

पूँजीवादी विकास व जातीय आरक्षण ने धीमी गति से ही सही दलितों के एक हिस्से को ऊपर उठने के अवसर प्रदान किये। भेदभाव, असमानता की खाई को कुछ पाटा है। किन्तु यह अभी भी बहुत चौड़ी है।

90 के दशक से देश में जारी उदारीकरण-वैश्वीकरण-निजीकरण की बयार में सरकारी नौकरियों में लगातार कटौती जारी है। साथ ही सेना, अर्धसैनिक बल व उच्च वैज्ञानिक व तकनीकी संस्थानों में पहले से ही आरक्षण की व्यवस्था नहीं है। इस तरह आज जातीय आरक्षण कुल रोजगार के बहुत छोटे हिस्से में ही लागू है।

जातीय आरक्षण के इस बेहद सीमित

भारतीय पूँजीवादी व्यवस्था की कभी-भी दिल्ली चाहत नहीं रही कि जाति व्यवस्था खत्म हो। जातिवादी भेदभाव, उत्पीड़न का वह हमेशा ही लाभ उठाता रहा है। इस सामाजिक भेदभाव से वह मजदूरों-मेहनतकशों को बांटकर रखता है। जातिवाद के कारण वह तमाम पिछड़े इलाकों में अपने शोषण की मात्रा व क्रूरता को बढ़ाकर अधिक मुनाफ़ा कमाता रहा है। हां, पूँजीवादी व्यवस्था अपनी गति में जरूर जाति व्यवस्था के आधार को खत्म करते हुए आगे बढ़ी है।

सुधार को भी स्वर्ण मानसिकता के लोग, संगठन पचा नहीं पाते हैं और जब-तब आरक्षण समाप्ति की मांग उठाने लगते हैं। योग्यता व अन्य तर्कों का हवाला देते हुए वे इस वास्तविकता को समझने से इंकार कर देते हैं कि जाति व्यवस्था के चलते समाज में अलग-अलग जाति के लोग अलग-अलग शैक्षिक, सांस्कृतिक स्तर पर खड़े हैं, वे असमान हैं। इन असमान लोगों को एक समान प्रतियोगिता की दौड़ में खड़ा कर देने का सीधा मतलब है कि शिक्षा-नौकरियों में सवर्ण जातियों के वर्चस्व को कायम रखना। असमान लोगों को

समान स्तर पर लाने के लिये उनके साथ असमान व्यवहार जरूरी है। पूँजीवादी दायरे में जातीय आरक्षण भी इसी का एक छोटा कदम है इसलिए इसका विरोध कहीं से भी जायज नहीं है।

सरकारी नौकरियों के निरंतर घटते जाने के साथ बढ़ती बेरोजगारी आज सभी जातियों के युवाओं-छात्रों के लिए चिन्ता का सबब बन चुकी है। परिणामस्वरूप चंद सरकारी नौकरियों की छीना झपटी काफ़ी बढ़ चुकी है। आज एक ओर तो सम्पन्न जातियों के कुछ लोग भी खुद को बेरोजगारी की इस भयावह स्थिति में आरक्षण के दायरे में शामिल करने की मांग उठाने लगे हैं तो वहीं दूसरी ओर उच्च सवर्ण जातियां नाम मात्र की नौकरियों में जातीय आरक्षण के खात्मे की मांग करने लगी हैं तो कुछ लोग जातीय के बजाय आर्थिक आधार पर आरक्षण का शिगूफ़ा छोड़ जातीय आरक्षण को रद्द करने की मांग करने लगे हैं। आज सभी जाति के छात्रों-युवाओं को यह समझना होगा कि बेरोजगारी की मांग के लिए साझा संघर्ष छोड़ा जाना चाहिए और साथ ही जातिगत भेदभाव के खात्मे के लिए पूँजीवादी दायरे में आरक्षण सरीखे सुधारों का समर्थन किया जाना चाहिए। बेरोजगारी के खिलाफ़ संघर्ष को जातीय आरक्षण के साथ गड्डमड्ड नहीं किया जाना चाहिए।

आज हमें यह भी समझने की जरूरत है कि पूँजीवादी व्यवस्था के रहते बेरोजगारी व जातीय व्यवस्था से निर्णायक तरीके से नहीं निपटा जा सकता। क्योंकि यह व्यवस्था अपने हितों में इन दोनों का ही इस्तेमाल कर रही है, उन्हें प्रश्रय दे रही है। ऐसे में सबको गरिमामय रोजगार के साथ-साथ जाति व्यवस्था के पूर्ण खात्मे के लिए देश को समाजवादी क्रांति की आवश्यकता है। समाजवादी क्रांति ही हर प्रकार के भेदभाव, उत्पीड़न को खत्म करने की राह खोलेंगी। -परचम



घर बैठे प्राप्त करें मजदूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहीं कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य विक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सेंटर केसी रोड, एनएच-5,
2. प्रिंट फोर्ट टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड,
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन,
4. रैंक, 45 नीलम चौक,
5. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे,
6. राम खिलावन बल्लभगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने,
7. हितेश ग़ोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास ।
8. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
9. स्थानीय अदालतों में : चैम्बर नं. 56-एस.के .जोशी - वकील साहब